e-ISSN: 3048-8796

प्रजनन विकारों के प्रबंधन में जातीय पशु चिकित्सा दवाओं की भूमिका

आकाश सिंह, अनूप कुमार एवं धवल भेसाणिया

पशु प्रजनन मादा रोग एवं प्रसूति विज्ञान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद -राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल . 132001, हरियाणा, भारत

पशुओं में प्रजनन विकार, जैसे बांझपन, गर्भधारण में देरी और अनियमित रजोधर्म चक्र, खासतौर पर डेयरी गायों और भैंसों में, किसानों के लिए आर्थिक रूप से अहम हैं। ये विकार दूध उत्पादन कम होने, बछडों की संख्या घटने और मारे जाने की दर बढ़ने का कारण बन सकते हैं, जो पशुधन पालन की स्थिरता को प्रभावित करते हैं। हाल के वर्षों में, आधुनिक दवाओं के दुष्प्रभाव, उच्च लागत, भोजन में विषैले अवशेष, सूक्ष्मजीवों की प्रतिरोधक क्षमता और जैविक पशुधन प्रणालियों के विकास के कारण, पशुधन उत्पादन में जड़ी-बूटी और पौधों की दवाओं का उपयोग बढ रहा है। इन पौधों का प्रयोग स्वस्थ्य प्रोत्साहक और रोगों के उपचार में किया जाता है। जबकि आधुनिक पशु चिकित्सा ने समाधान दिए हैं, प्रजनन समस्याओं के प्रबंधन के लिए जातीय पशु चिकित्सा में रुचि भी बढ़ रही है। ये पारंपरिक तरीके जड़ी-बूटियों, प्राकृतिक और स्वदेशी उपचारों का इस्तेमाल करते हैं। खासतौर पर उन इलाकों में जहां आधुनिक पशु चिकित्सा सेवाएं नहीं पहुंचती या प्रभावी नहीं हैं, ये प्रथाएं महत्वपूर्ण हैं। इस संदर्भ में, जातीय पशु चिकित्सा दवाएं परंपरागत ज्ञान, जड़ी-बूटियों और तरीकों को मिलाकर पशु रोगों और प्रजनन विकारों के प्रबंधन के लिए एक भरोसेमंद विकल्प प्रस्तुत करती हैं।

प्रजनन संबंधी विकार जैसे बांझपन, एनेस्ट्रस, पुनरावृत्ति प्रजनन, गर्भाशय संक्रमण और अपवर्जित प्लेसेंटा वे आम समस्याएँ हैं, जिनका सामना पशुपालक किसान करते हैं। इन मामलों का समाधान पाने के लिए जातीय पशु चिकित्सा तेजी से मान्यता पा रही है। बांझपन एक सामान्य प्रजनन समस्या है, जिसमें पशु कई प्रयासों के बाद भी गर्भाधारण नहीं कर पाते। एनेस्ट्रस का अर्थ है जब मद चक्र रुक जाता है, जो अक्सर हार्मोनल असंतुलन के कारण होता है। पुनरावृत्त प्रजनन तब होता है जब पशु कई सफल प्रयासों के बावजूद गर्भधारण करने में असमर्थ रहते हैं। गर्भाशय संक्रमण, जैसे एंडोमेट्राइटिस, गर्भधारण में बाधा डाल सकते हैं और प्रजनन क्षमता को कमजोर कर सकते हैं। अपवर्जित प्लेसेंटा वह स्थिति है जिसमें जन्म के बाद प्लेसेंटा बाहर नहीं आता, और इससे संक्रमण तथा बांझपन हो सकता है।

जातीय पशु चिकित्सा दवाएं कई फायदे प्रदान करती हैं, जैसे सरल पहुंच और कम लागत। क्योंकि ये अक्सर स्थानीय पौधों और जड़ी-बूटियों से निर्मित होती हैं, जिससे वे ग्रामीण और दूरदराज के किसानों के लिए किफायती और आसान होती हैं। सिंथेटिक दवाओं के विपरीत, कई जड़ी-बूटी उपचार सही उपयोग पर कम साइड इफेक्ट्स के साथ अधिक सुरक्षित माने जाते हैं। ये दवाएं विभिन्न कृषि समुदायों की सांस्कृतिक परंपराओं में गहरे जुड़े होते हैं, जिससे किसान इन्हें स्वीकारते और भरोसा करते हैं। इसके अलावा, एक प्राकृतिक विकल्प के रूप में, जातीय उपचारें अक्सर अधिक टिकाऊ मानी जाती हैं, क्योंकि इनमें कम पर्यावरणीय प्रभाव होता है और वे सिंथेटिक रसायनों और हार्मोन की तुलना में अधिक स्थिर हैं।

मादा पशुओं की प्रजनन क्षमता में सुधार के लिए औषधीय जड़ी-बूटियाँ

प्रजनन दक्षता पशु उत्पादन प्रणालियों के समग्र और आर्थिक प्रदर्शन में अहम भूमिका निभाती है। यद्यपि प्रजनन विकार, जैसे कि एनेस्ट्रस, पुनरावृत्ति प्रजनन, एंडोमेट्राइटिस, अपवर्जित प्लेसेंटा और गर्भपात, डेयरी पशुओं की उत्पादकता को बाधित कर सकते हैं और किसानों को आर्थिक नुकसान पहुंचाते हैं, सदियों से जड़ी-बूटियों का प्रयोग इन विकारों के समाधान के लिए किया जाता रहा है। कई जड़ी-बूटियों के औषधीय गुण इन समस्याओं को कम करने में मददगार हैं। विशेष रूप से, कुछ पौधों में मौजूद द्वितीयक मेटाबोलाइट्स, जो अति सक्रिय

होते हैं, प्रसव के बाद एनेस्ट्रस वाली गायों में मासिक चक्र को पुनः शुरू करने के लिए प्रभावी पाए गए हैं। ये मेटाबोलाइट्स अक्सर एंटीऑक्सिडेंट का काम करते हैं, प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन प्रजातियों (आरओएस) को निष्क्रिय कर देते हैं या अंडाशय हार्मोन के स्राव को नियंत्रित करके उनका चिकित्सीय प्रभाव दिखाते हैं। प्रसव के बाद, विशेष रूप से भैंसों और गायों में, प्लेसेंटा से जुड़े जोखिम एक आम समस्या हैं। ऐसी जड़ी-बूटियों का उपयोग, जिनमें गर्भाशय-उत्तेजक गुण होते हैं, इन उन्मुक्त प्लेसेंटा को बाहर निकालने में मदद कर सकता है, जिससे प्रजनन संबंधी विकारों की संख्या घट सकती है।

पशुओं में प्लेसेंटा न निकलने के उपचार के लिए परंपरागत रूप से विभिन्न पौधों और उनके भागों का इस्तेमाल किया जाता है। इनमें बांस की छाल और पत्तियाँ, बरगद के पत्ते और टहनियाँ, बेर के पत्ते और टहनियाँ, कपास के पौधे के गोले और जड़ें, कसाल्पिनिया की जड़ की छाल, पोई और पुनर्नवा के पौधे, साथ ही अमरघास, मण्डूकपर्णी, सरसों के बीजों के तेल, जूट के सूखे फूल, और बरगद तथा बेर की जड़ें शामिल हैं। अन्य प्रभावी विकल्पों में लाजवंती, केला, और गन्ना की विस्कीं के पत्ते हैं।इसके अतिरिक्त, अजवायन और जड़ जैसी जड़ी-बूटियाँ प्लेसेंटा को निकालने और मेट्राइटिस का उपचार करने के लिए जानी जाती हैं। हाल के अध्ययन बताते हैं कि करी पत्ता और बेल का संयोजन बकरियों और प्रसवोत्तर भैंसों में मद, अंडोत्सर्ग और प्रजनन क्षमता में सुधार करता है।

असम में एनेस्ट्रस के लिए पारंपरिक उपाय में गिलोय को अमलतास की छाल और कटहल के पत्तों के साथ खिलाना शामिल है। होन्नेगौड़ा ने पाया कि इन जड़ी-बूटियों के मिश्रणकृ जिनमें गिलोय, अमलतास, कटहल के कोमल पत्ते, चित्तरथ की जड़ और भेंडी के पत्तेकृ गायों और भैंसों में गर्भधारण दर बढ़ा सकते हैं। त्रिपाठी ने प्रजनन विकारों के इलाज के लिए आहार में शामिल एंटीबायोटिक्स के विकल्प के रूप में प्राकृतिक वृद्धि प्रोत्साहकों, फ़ाइटोजेनिक्स, का मूल्यांकन किया। चित्तरथ गर्भाशय के संकुचन को प्रेरित करता है, जबकि जीवंतिका चक्र को नियमित करने में मदद करती है। इंद्रायणी का उपयोग प्रसवोत्तर संक्रमण रोकने के लिए किया जाता है, और करेला गोनाडोट्रोपिन जैसी गतिविधि दिखाता है, जो प्रजनन हार्मोन को रिहा कर पशुओं में मद को प्रेरित करता है।

बैतुले ने पाया कि बेल और करी पत्ता का संयोजन, साथ ही अकेले करी पत्ता, विलंबित यौवन वाली भैंस बछियों में प्रजनन क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है, खासकर अंडोत्सर्ग और गर्भधारण की दर में सुधार के साथ। लहसुन और लौंग का उपयोग बांझपन से निपटने, गर्भपात को रोकने और गर्भपात के बाद सफाई में प्रभावी पाया गया है। इसके अलावा, रसभरी, जब लहसुन के साथ मिलाई जाती है, तो इसकी उच्च खनिज और विटामिन सामग्री के कारण, प्रसवोत्तर बांझपन के जोखिम को कम करने में मदद मिलती है। जिनसेंग, जो हार्मोन के संतुलन के लिए जाना जाता है, और शतावरी, जो दूध उत्पादन बढ़ाने, प्रजनन क्षमता सुधारने और ऊब एवं संक्रमण को रोकने में लाभकारी हैं।

नर पशुओं की प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लिए जड़ी-बूटियां

यह रिपोर्ट दिखाती है कि जड़ी-बूटियां और पौधे अधिक वीर्य उत्पादन, मजबूत स्खलन, उच्च शुक्राणु संख्या, अधिक वीर्य मात्रा और बेहतर यौन स्वास्थ्य में सहायता कर सकते हैं। गोखरू, गिलोय, लंबी जड़, और मारल जड़ का सेवन शुक्राणु के उत्पादन को बढ़ावा देता है, उसकी जीवित रहने की अवधि बढ़ाता है, वीर्य की मात्रा, शुक्राणु की गति, जीवित शुक्राणु का प्रतिशत, शुक्राणु सांद्रता, असामान्य शुक्राणु, दैनिक शुक्राणु उत्पादन, शुक्राणु की जीवनकाल और यौन इच्छा को सुधारता है। वीर्य की गुणवत्ता सफल कृत्रिम गर्भाधान के लिए जरूरी है। हल्दी और काली मिर्च जैसी जड़ी-बूटियों में पाए जाने वाले एंटीऑक्सिडेंट्स शुक्राणु की गतिशीलता और वीर्य की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं, ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करते हैं, जो खराब वीर्य गुणवत्ता का एक मुख्य कारण है। शतावरी के जलीय अर्क ने शुक्राणु की जीवन क्षमता, गतिशीलता, एक्रोसोमल अखंडता और प्लाज्मा झिल्लियों की अखंडता में महत्वपूर्ण सुधार किया है। इस उपचार ने लिपिड पेरॉक्सिडेशन को काफी हद तक कम कर दिया है, और सहजन के अर्क ने बीक वीर्य से पृथक ई.कोली के खिलाफ शक्तिशाली रोगाणुरोधी गतिविधि दिखाई है।

जातीय पशु चिकित्सा दवाओं में मानकीकरण का अभाव है, क्योंकि हर्बल दवाओं की तैयारी और खुराक में

भिन्नता हो सकती है, जिससे परिणामों में भिन्नता आ सकती है। हालांकि, कई पारंपरिक उपचारों का उपयोग सदियों से होता आया है, लेकिन उनकी प्रभावशीलता का समर्थन करने वाले वैज्ञानिक प्रमाण अक्सर सीमित या प्रामाणिक हैं। इसके अलावा, कुछ पौधे, यदि सही तरीके से उपयोग न हों, तो वे पशुओं के लिए विषैले हो सकते हैं या उनके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।कते हैं।

निष्कर्ष

विभिन्न जड़ी-बूटियाँ पशु उत्पादकता और प्रजनन में अहम भूमिका निभाती हैं। ये जड़ी-बूटियाँ पशु आहार में अनुपूरक, वृद्धि को बढ़ावा देने, रोग प्रतिरोधक क्षमता सुधारने, प्रजनन में सुधार और मीथेन व अमोनिया के उत्सर्जन को घटाने में सहायता करती हैं। टैनिन, सैपोनिन, फ्लेवोनोइड्स और आवश्यक तेल जैसे द्वितीयक मेटाबोलाइट्स रूमेन परिवर्तन के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल होते हैं, साथ ही इनमें पोल्ट्री और सूअर पालन में भी अच्छी संभावनाएँ हैं। पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण बेहद जरूरी है, क्योंकि यह अक्सर खो जाता है। औषधीय जड़ी-बूटियाँ चिकित्सीय और पोषण संबंधी मदद के रूप में उपयोगी हो सकती हैं, और ये दुनिया भर में मानव और पशु स्वास्थ्य प्रणालियों में अहम भूमिका निभाती हैं।

Corresponding E-mail:
anoop.vet2017@gmail.com